A PUBLICATION OF MOTHERHOOD UNIVERSITY, ROORKEE

(Recognized by the UGC with the right to award degrees u/s 22(1) of the UGC act 1956 andestablished under Uttarakhand Government Act No. 05 of 2015)

Motherhood International Journal of Multidisciplinary Research & Development

A Peer Reviewed Refereed International Research Journal

Volume I, Issue IV, May 2017, pp. 01-09

ONLINE ISSN-2456-2831

प्राथमिक विद्यालयो की शैक्षिक समस्याएँ एवं उनका समाधान विकास खण्ड लक्सर जिला हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

Dr. Neelam Sharma
Professor, Faculty of Education,
Motherhood University, Roorkee, Haridwar

सारांश :

आज आर्थिक समृद्धि के मूल में प्राकृतिक संसाधनों के स्थान पर मानवीय क्षमताओं एवं योग्यताओं ने जगह ले ली है। मानवीय क्षमताओं एवं योग्यताओं में वृद्धि, सुधार की प्रकिया विद्यालयों से होकर गुजरती है। परन्तु यदि विद्यालयों में शिक्षकों तथा शिक्षण अधिगम की सभी व्यस्थाओं का अभाव हो तो विद्यालय में मुल्यवान प्रतिभाओं का सृजन नही हो सकता है। अध्ययन के क्षेत्र में जहाँ शिक्षा ही सामाजिक आर्थिक विकास का एक मात्र विकल्प है। मैं शिक्षा के मौलिक अधिकार के आलोक में शिक्षा की वर्तमान संस्थागत जटिलताओं, समस्याओं एवं उनके समाधान को प्रस्तुत करके अध्ययन के माध्यम रेखकिंत करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावनाः–

नव उत्तराखण्ड राज्य पूरे देश में तेजी से बढ़ने वाले राज्यों की श्रेणी में है। जहाँ प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति में और संख्या में वृद्धि हो रही है। प्राथमिक शिक्षा की स्थिति शासकीय और गैर– शासकीय प्रयासों के बावजुद भी इनकी स्थिति सोचनीय बनी हुई है। राज्य के कितने ही विद्यालयों में अध्यापकों के एवं प्रधानाध्यापको के पद रिक्त है। शासना देशों के अनुसार ही 45 छात्रों पर एक शिक्षक है सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों में अधिकतम दो पद सृजित है। उत्तराखण्ड के अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षक– छात्र अनुपात शासनादेशों एवं नियम के अनुसार नही है।

हरिद्वार के लोगों में शिक्षित होने की लालसा तो अनके मन में पहले से ही विद्यमान थी। यहाँ पर खेती भूमि की कमी , स्व–रोजगार एवं उद्योग –धन्धे आदि की कमी के कारण सरकारी नोकरी के लिये पढ़ना लिखना आवश्यक समझा जाता । इन्ही समस्यों के कारण जनपद हरिद्वार में विभिन्न सामाजिक संगठन प्रयासों से कई स्कूल खुले । शिक्षा का इतना अधिक महत्व सरकारी प्रयासों के बाद भी इस क्षेत्र में अनेक समस्य आज भी विद्यमान हैं रचनात्मक का अभाव, शिक्षको में छात्रों को प्रेरित करने की क्षमता का अभाव ,

शिक्षको , और शिक्षा कर्मचारियों की क्षमताओं , अभिरूचियों के अनुसार कार्य न ले पाना बच्चे के सर्वागीण विकास में कार्य न करना , सरकारी आदेशों के अनुसार कार्य करना ग्रामीण क्षेत्रों , पिछडे गॉवों में कार्य करने की शिक्षकों की अभिरूचि एवं अध्यापकों , प्रधानाध्यापको का विद्यालयों में अनुपस्थित रहना आदि गम्भीर समस्या है। प्राथमिक विद्यालयों में अपव्यय– अवरोधन की एवं ओर बड़ी समस्या है।

शोध विधि :–

प्राथमिक विद्यालय के अध्ययन का मुख्य उदेश्य विकासखण्ड लक्सर के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की शिक्षण सम्बंधी अनेक प्रकार की समस्याओ का अध्ययन करना है। लक्सर विकासखण्ड के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापको, विद्यार्थीयों एवं अभिभावकों की समस्याओं को सुलझाने के लिये सुझाव देना है। अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के हरिद्वार जनपद लक्सर ब्लॉक के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों का है। इस शोध में राजकीय प्राथमिक विद्यालय के 50 अध्यापको , 100 छात्रों और 200 अभिभावकों को लिया गया है।

प्रस्तुत शोध में करने वाली ने विकास खण्ड लक्सर के 203 स्कूलो में राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में से 30 विद्यालयों का चयन लाटरी विधि से किया । इन विद्यालयों में स 50 शिक्षक 200 छात्र , 100 अभिभावक को उद्देश्य के लिये चुना गया अध्ययन के लिये शिक्षक तथा विद्यवानो ने तीन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया । जिनमें अध्यापको , छात्रों विद्यार्थीयो एवं अभिभावको से सम्बधित समस्ये है सभी की समस्यों को प्रश्नावली के द्वारा जानने का प्रयास किया है। और प्राप्त किये आंकडों को तालिका में प्रस्तुत किया गया।

प्रमुख समस्याये :–

प्राप्त आंकडो को तालिका बद्ध करके शोध परिणाम को उद्देश्य के अनुसार तालिका 1,2,3, प्रस्तुत किया गया है। तथा शिक्षक छात्र एवं अभिभावक की समस्याओं का विवरण इस प्रकार से है–

शिक्षको सम्बधी समस्याये

इस आंकडे से प्राप्त शिक्षको से मिलने पर पता चला कि सभी विद्यालयों में छात्र और अध्याापक का अनुपात सही नही है परिणामस्वरू शिक्षको को अधिक कक्षाओं में शिक्षण कार्य करना पडता है। इस प्रविधि में शिक्षको द्वारा प्राथमिक विद्यालयों की सभी कक्षाओं को दो या तीन भागों में बाटकर एक साथ पढाना पडता है। अध्ययन के 86 प्रतिशत शिक्षक बहुकक्षीय शिक्षण कर रहे है।

उल्लेख मिलता है कि शिक्षणप्रशिक्षण में अभी तक शिक्षको को अधिक कक्षाये पढ़ाने की अभी तक कोई प्रतिशक्षण नही दिया गया ऐसी परिस्थिति में छात्रों की उपलब्धि पर गलत प्रभाव पडना स्वाभाविक है। क्योकि इससे ना तो बच्चों का सही से मूल्यांकन हो पाता और नही उनका गृहकार्य का अवलोकन हो पाता । इसके अतिरिक्त शिक्षको को अनेक प्रकार मीटिंग में चुनाव कार्य , मिडडे मिल की व्यवस्था करना , मीटिंग आदि में उपस्थित होना पडता है जिससे विद्यालयों में अध्यापन पर विपरीत प्रभाव पडता है। शिक्षको ने यह बताया कि आज भी स्कूलों में बच्चों को स्कूल पहुचने के लिये अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उनको विद्यालयों में जाने केलिए गॉवों में सडके टुटी – फुटी व जाने के साधन नही हें अभिभावक अपने बच्चों को स्कूल भेजने में विशेष रूचि नही लेते /ब्लॉक संसाधन केन्द्र तथा न्याय पंचायत

संसाधन केन्द्रो में शिक्षको की शिक्षण तथा शिक्षणेत्तर समस्यों का हलन हो पाना भी बच्चों को गुणात्मक शिक्षा दे पाने में एक विकट समस्या आ रही है।

छात्रों से सम्बंधित समस्याये

अध्ययन में छात्र–छात्रों की समस्याओं का पतालगाने का प्रयास किया गया । उनका तालिका से पता चलता है कि आज भी कुछ स्कूलों में छात्र–छात्राओं को बैठने की समुचित व्यवस्था नही है टाट–पट्टियों की व्यवस्था न होने से बच्चों को दिन भर जमीन पर बैठना । उनके शिक्षण कार्य , शरीर की शोध व स्वास्थय पर विपरीत प्रभाव पड रहा है। छात्रों न यह भी बताया कि विद्यालय में शिक्षको की कमी , सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन न होना , स्कूल में बिजली , पानी तथा शोचालयों की उचित व्यवस्था का न होना यद्यपि कुछ विद्यालयों में इन सुविधाओं को जुटाया तो गया है परन्तु उनके रखरखव के अभाव में छात्र – छात्राओं द्वारा उनका उपयोग होना सम्भव नही हो पा रहा है।

बच्चों के लिये भम्रण कार्यक्रमों आदि की व्यवस्था न होना भी बच्चों के सर्वागीण विकास को प्रभावित कर रहा है। स्कूलों में खेल , वाद – विवाद भाषण संगीत आदि प्रतियोगिताओं का समुचित आयोजन न होना, और सक्ष्म आयोजन पर सभी बच्चों की प्रतिभागिता न होना , भी छात्र –छात्राओं को उनके स्कूल के प्रति आर्कषण कम करा रहा है।

अभिभावकों से सम्बंधित समस्याये

इस अध्ययन में अभिभावकों से विचार –विमर्श करने से पता चला कि अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा से संतुष्ट नही है। अभिभावकों से इसका कारण जानने से पता चला कि स्कूलों में शैक्षिक वातावरण की कमी , शिक्षको का शिक्षा से दूसरे कार्यो में लगे रहना । अनुपस्थित रहना गृह कार्यो का समय–समय पर अवलोकन न करना तथा शिक्षको का विद्यालय के प्रति विशेष लगाव न होना , सिर्फ औपचारिक मात्र रह गया । अभिवभावको ने यह भी बताया कि अधिकतर शिक्षक लम्बी दूरी तय करके विद्यालय पहुचते है इससे शिक्षक बच्चों को अपना सहयोग भी नही दे पा रहे हैं अभिभावक ओर शिक्षको के द्वारा स्कूल में जो शैक्षिक वातावरण का निर्माण होना चाहिये थावहनही हो पा रहा है कई अभिभावक स्कूलों में विशोष योगदान देने के लिये इच्छुक थे।लेकिन शिक्षको द्वारा विशेष रूचि नही दिखाई गई। अभिभावको का स्कूलो में विशेष अवसर पर जाना होता है। ऐसे में अभिभावक स्कूलों में अपना योगदान नही दे पा रहे है।

शैक्षिक उपादेयता :–

1. स्कूलो में शिक्षको की संख्या उचित अनुपात में हो विद्यालय में एक पी0टी0 आई है।
2. शिक्षण सहायक सामग्री उचित मात्रा में उपलब्ध होनी चहिए।
3. स्कूलो मेंबच्चो के लिये बेढने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
4. सभी विद्यालयों में खेल का समान हो।
5. पाठ्यक्रम रोचक बनाकर पढ़ाना चाहिये। जिससे छात्र–छात्राये शिक्षण में रूचि ले सके।
6. योग्य एवं युवा शिक्षको की उन्नति और हेड मास्टर के पद पर नियुक्ति करनी चहिये।
7. पुस्तकालय में बच्चों के लिये बाल–पत्रिकाओं का संग्रह रखना चाहिए।
8. शिक्षको को अपना शिक्षण कार्य मनोवैज्ञानिक , सामाजिक व व्यवसायिक बनाना चहिए।
9. कक्षा के छोटे बच्चों की समय–सारणी बडे बच्चों से अलग होनी चहिये।

10. विद्यालय में बिजली और पानी की सुविधा होनी चहिए।
11. मध्याहन भोजन उचित मात्रा व पौष्टिक होनी चहिये।
12. शिक्षको को शिक्षण कार्य में स्थानीय युवक –युवतियों की सहायता लेनी चाहिये।
13. बच्चों को व्यावसायिक पाठ्यक्रम सिखना चाहिये।
14. समावेशी स्कूल खुलवाने चाहिये थे विद्यालयों में समावेशी शिक्षा होनी चहिये।
15. आवश्यकता अनुसार नये विद्यालय खुलवाने चाहिये। पुराने विद्यालयों में शिक्षण सामग्री की सुविधा है।
16. जिन शिक्षको के पास आवास नही उनके लिये आवास की व्यवस्था करनी चहिये।
17. अध्यापक अपने ही क्षेत्र का होना चहिये। (स्थानीय)
18. 'पैरा टीचर' की नियुक्ति की की जानी चहिये।
19. स्कूलो में सांस्कृतिक प्रोग्राम करवाने चहिये।
20. विद्यालयों में योगासन , पी0टी0 आदि की व्यवस्था होनी चहिये।
21. सभी विद्यालयों में प्राथमिक –चिकित्सा की व्यवस्था होनी चहिये।
22. सभीविद्यालयोंमें योग शिक्षा – छात्रो के शरीर की क्रिया- प्रणाली पर नियंत्रण रखने के लिए व्यायाम की सर्वसुलभ पद्धतियाँ करवानी चाहिये

1. तालिका –1

विकासखण्ड लक्सर में सेवारत आध्यापको की समस्याए

प्रश्न संख्या	प्रश्नो का विवरण	उत्तर हॉ		उत्तर नही	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	विद्यालय में अध्यापको व कक्षाओं के बीच अनुपात सही है?	10	10	15	15
2	विद्यालय में शिक्षक और शिक्षार्थी के सम्बंध अच्छे है।	20	20	05	05
3	विद्यालय में शैक्षिक क्रियाओं को पुरा करने में अभिभावको का सहयोग मिलता है।	15	15	10	10
4	पाठ्यक्रम बच्चों को रूचि के अनुसार है।	15	15	10	10
5	विद्यालय की समय सारणीय शिक्षको के अनुकूल है।	20	20	05	05
6	विद्यालय में कमरे पर्याप्त व अनुकूल है।	15	15	10	10
7	विद्यालय में फर्नीचर की व्यवस्था है।	10	10	15	15
8	विद्यालय में शौचालय है।	0	0	50	50
9	कमरे हावा दार है।	20	20	05	05
10	विद्यालय के कमरो में पंखे बिजली है।	0	0	50	50
11	साफ पानी की व्यवस्था है।	0	0	50	50

तालिका –2

विकासखण्ड लक्सर में छात्रा की समस्या का विवरण

प्रश्न संख्या	प्रश्नो का विवरण	उत्तर हॉ		उत्तर नही	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	विद्यालय का वातावरण उनकी शिक्षा के अनुकूल है।	90	90	10	10
2	विद्यालय में टाट –पट्टी पर बैठना सुविधाजनक है ?	10	10	90	90
3	विद्यालय में अध्यापको की प्रर्याप्त संख्या है।	30	30	70	70
4	विद्यालय में व्यायाम करवाया जाता है।	100	100	0	0
5	विद्यालय में समय–समय पर खेल –प्रतियोगिता होती है।	90	90	10	10
6	खेल समाग्री पर्याप्त उपलब्ध है।	42	42	58	58
7	टाट–पट्टी का उचित प्रबंध है।	44	44	56	56
8	विद्यालय में शौचालय उपलब्ध है।				
9	विद्यालय में पीने का पानी साफ है।	60	60	40	40
10	विद्यालय में ज्ञान–वध्रक या रूचिकर सामग्री है।	53	53	47	47
11	विद्यालय द्वारा प्रतियोगिता में भाग लिया जाता है।	40	40	60	60
12	विद्यालय के सभी कमरो में बिजली पानी की व्यवस्था है।	0	0	100	100

तालिका –3

अभिभावको की समस्याओ का विवरण

प्रश्न संख्या	प्रश्नो का विवरण	उत्तर हॉ		उत्तर नही	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	विद्यालय में पी0टी0ए0 की मिटिंग होती है।	77	77	23	23
2	विद्यालय उनके बच्चो को सांस्कृतिक कार्यक्रमो में भाग लेने में मदद करता है।	30	30	70	70
3	विद्यालय उनके बच्चो की समस्याओं को धैर्य पूर्वक सुनता है।	40	40	60	60
4	विद्यालय उनके बच्चों के स्वासि का ध्यान रखता है।	60	60	40	40
5	विद्यालय का वातावरण उनके बच्चों के अनुकूल है।	48	48	52	52
6	विद्यालय की समय–सारणी उनके बच्चों के अनुकूल है।	45	45	55	55
7	विद्यालय का अनुशासन उनके बच्चों के अनुकूल है।	93	93	7	7
8	विद्यालय उनके बच्चो के अच्छे कार्यो पर पुर्नवलन देता है। यारितोषित करता है।	32	32	69	69
9	विद्यालय में पीने का पानी साफ है।	60	60	40	40
10	विद्यालय में ज्ञान–वर्धक या रूचिकर सामग्री है।	53	53	47	47
11	विद्यालय द्वारा प्रतियोगिता में भाग लिया जाता है।	40	40	60	60
12	विद्यालय के सभी कमरो में बिजली पानी की व्यवस्था है।	0	0	100	100

संदर्भ

1 मानचकुवर्ती (1980) टु स्टडी द आर्गनाइजेशन कलाइमेंट ऑफ प्राइमरी स्कूल्स इन वेस्ट बंगाल, शोध प्रबंध प्रकाशित (पी0उच0डी0 विज्ञान कलकत्रा वि0वि0 पश्चिमी बंगाल)

2. देनिक जागरण ब्युरो (2009) शिक्षको की कमी, स्कूलो में ताले , लेख **अमर उजाला**

पतंजलि योग- सूत्र